CHAPTER 14, काव्य-संध्या के बाद[गुमित्रानंदन पंत]

PAGE 148, अभ्यास

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. संध्या के समय प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, कविता के आधार पर लिखिए।

जब शाम होती है तो सूर्य के धुप में एक लालिमा आ जाती हैं ।ये लालिमा जब पीपल के पत्तो पे पड़ती है तो उनका रंग तांबे की तरह प्रतीत होता हैं। और पत्ते पेड़ से गिरते हुए ऐसे दिखते हैं जैसे मानो झरना स्वर्णिम आभा के साथ विभिन्न प्रवाह में बह रहा हो। सूर्य इस गति से चलता है जैसे वह पृथ्वी के अन्दर समां रहा हो है। और देखते - देखते सूरज गायब हो जाता है। गंगा का पानी एक अन्धकारमय लालिमा लिए चितकबरा प्रतीत होने लगता है।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. पंत जी ने नदी के तट का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पन्त जी ने इस कविता में उस वृद्ध औरतों की बहुत सुन्दर उपमा दी हैं ।उन्होंने कहा हैं कि नदी के तट पर ध्यान में मगन वह वृद्ध औरतें ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे किसी शिकार की चेष्ठा में बगुले खड़े हो । उन्होंने नदी की बहती धारा को वृद्ध औरतों के मन में बहने वाले दुःख के समान बताया हैं । उनकी कविता में वृद्ध औरतें और बगुले दोनों ही नदी के किनारे में मिलते हैं । उनके सफ़ेद रंग के कारण दोनों की छवि एक समान प्रतीत होती हैं ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को किन-किन उपकरणों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?

बस्ती में विद्यमान छोटे से गाँव के अवसाद को इनके माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है :-

(क) गाँव के घरों में डिबरी का प्रयोग होता है प्रकाश पाने के लिए ,यह प्रकाश कम देती है और धुआं ज्यादा ।

(ख) लोगों के मन का अवसाद उनकी आँखों में जालों के रूप में विद्यमान रहता है ।

(ग) उनके दिल का क्रंदन तथा मूक निराशा, दीये की लौ के साथ कांपती है ।

(घ) गाँव का बनिया ग्राहकों का इंतज़ार करते - करते ऊंघ जाता है ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. लाला के मन में उठनेवाली दुविधा को अपने शब्दों में लिखिए।

लाला सोचता है कि क्यों वह गरीबी, दुख और उत्पीड़न झेल रहा है? उसे खुशी क्यों नहीं मिलती?

वह अपने रिश्तेदारों को एक साफ सुथरा घर देने में सक्षम क्यों नहीं है? वह शहर में रहने वाले बनियों की तरह प्रगति क्यों नहीं कर पाता? किसके द्वारा उसकी पदोन्नति का साधन रोका गया है? वह सोचता है कि ऐसा कुछ तो है जो उसकी प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रहा है ।उसका समय और उसका भाग्य उसे प्रगति करने का अवसर क्यों नहीं देते । लाला के मन में ये सारी दुविधाएं पैदा हो रही हैं।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. सामाजिक समानता की छवि की कल्पना किस तरह अभिव्यक्त हुई है?

सामाजिक समानता की छवि की कल्पना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है :-

(क) कर्म तथा गुण के समान ही सकल आय-व्यय का वितरण होना चाहिए ।

(ख) सामूहिक जीवन का निर्माण किया जाए ।

(ग) समाज को धन का उत्तराधिकारी बनाया जाए ।

(घ) सभी व्याप्त वस्त्र ,भोजन तथा आवास के अधिकारी हों ।

(ङ) श्रम सबमें समान रूप से बंटे ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. 'कर्म और गुण के समान .... हो वितरण' पंक्ति के माध्यम से कवि कैसे समाज की ओर संकेत कर रहा है?

इस पंक्ति में, कवि समाज में समानता के अधिकार की कल्पना कर रहा है जहाँ किसी भी प्रकार का वितरण मनुष्य के कार्यों और गुणों पर आधारित होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को उसके काम करने की क्षमता के आधार पर काम दिया जाये जिसे वो भली भांति कर सके और खुद के

लिए अच्छी आमदनी कर सके। इससे समाज में गरीबी दूर होगी और समाज मजबूत बनेगा हैं। समाजवाद के मूल गुण वो होते है जिसमें किसी एक वर्ग को आय व्यय का अधिकार नहीं हो। समान अधिकार से सभी को रोजगार के अवसर प्राप्त कराया जाये ।